औरतों के लिये तक़रीर

माँ की मुहब्बत व ममता

ख़िताब

हज़रत मौलाना पीर ज़ुल-फ़क़ार साहिब

औरतों के लिये तक़रीर

माँ की मुहब्बत व ममता

ख़िताब

हज़रत मौलाना पीर ज़ुल-फ़क़ार साहिब

हिन्दी अनुवादः मुहम्मद इमरान क़ासमी

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो (प्रा. लि.)

2158, एम. पी. स्ट्रीट, पटौदी हाऊस, दरिया गंज

नई दिल्ली-110002

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

नाम किताब	माँ की मुहब्बत व ममता
ख़िताब	मौलाना पीर ज़ुल्-फ़क़ार साहिब
हिन्दी अनुवाद	मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी
संयोजक	मुहम्मद नासिर ख़ान
तायदाद	2100
प्रकाशन वर्ष	अक्तूबर 2005
कम्पोज़िंग	इमरान कम्प्यूटर्स
	मुज़फ़्फ़र नगर (0131-2442408)

\>>>>>>>>>>>

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो प्रा० लि०

2158, एम. पी. स्ट्रीट, पटौदी हाऊस, दरिया गंज, नई देहली-110002

फ़ोन आफ़िस, 23289786, 23289159 आवास, 23280786

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

कलिमाते-फ़कीर

हज़रत मौलाना सैयद अ़ब्दुल-वहाब शाह बुख़ारी
नक़्शबन्दी मद्द-द ज़िल्लुहू
ख़लीफ़ा हज़रत मौलाना पीर हाफ़िज़ ज़ुल्-फ़क़ार अहमद
नक़्शबन्दी मुजद्दिदी दामत बरकातुहुम

दुनिया में अनेक चीज़ें पाई जाती हैं। किसी चीज़ को देखा जाना ख़ूबी में शुमार किया जाता है और किसी चीज़ को न देखा जाना ख़ूबी शुमार की जाती है। औ़रत की ख़ूबी यह है कि मेहरम के अलावा किसी ने उसको न देखा हो। दुनिया का दस्तूर है कि जो चीज़ क़ीमती हो उसकी हिफ़ाज़त की जाती है। और उसको छुपाने की कोशिश की जाती है। इसी तरह औ़रत के बारे में करना चाहिये।

अल्लाह तआ़ला ने औ़रत को जो मक़ाम और रुतबा दिया है, नई-नई चीज़ों के आविशकार, खुराफ़ात और अख़बारों व पत्रिकाओं के ज़रिये औ़रत के उस मक़ाम की शक्ल को बिगाड़ कर पेश करने लिये निन्दनीय कोशिश की जा रही है। इसलिये ऐसी किताब की ज़रूरत थी जो हमारी माँओं बहनों के लिये सही राह दिखाने वाली साबित हो। क्योंकि "दारुल मुताला" बूढ़ों, नौजवानों, बच्चों और औ़रतों सबके दीनी व दुनियावी फ़ायदे के लिये क़ायम किया गया है, इसलिये औ़रतों के लिये यह किताब प्रकाशित की जा रही है ताकि वे इससे फ़ायदा उठा सकें।

इस सिलसिले में हमारे हज़रते अक़्दस मौलाना फ़क़ीर की किताब का इसलिये चयन किया गया है कि इसमें औरत के मक़ाम, उसकी ज़िम्मेदारी, उसकी शफ़क़त और उसके लिये अज्र व सवाब को इस अन्दाज़ में पेश किया गया है कि औरत के अन्दर अपनी ज़िम्मेदारी को पूरा करने का शौक़ इतना पैदा हो जाता है कि वह अपनी ज़िम्मेदारी को अच्छे तरीक़े से पूरा करने में ही अपनी सआ़दत (नेकबख़्ती) समझती है।

बन्दे के पीर व मुर्शिद हज़रत पीर ज़ुल्-फ़क़ार अहमद दामत बरकातुहुम, हज़रत ग़ुलाम हबीब रहमतुल्लाहि अ़लैहि के तरबियत-याफ़्ता हैं जो वाक़ई बहुत बड़े मुर्शिद (बुज़ुर्ग और दीनी रहनुमाई करने वाले) थे।

आपका अक्सर वक़्त विदेशों में अल्लाह की तरफ़ दावत देने (यानी तब्लीग़) में गुज़रता है। मेरे हज़रते अक़्दस जिस मौज़ू (विषय) पर तक़रीर करें बस उसका हक़ अदा कर देते हैं। घर के अक्सर मसाईल (समस्यायें) औ़रत की तरबियत (पालन-पोषण, सभ्यता और शिष्टाचार की शिक्षा) न होने की वजह से पैदा होते हैं, अगर औ़रत इस्लामी तरबियत के ज़ेवर से आरास्ता (सजी-संवरी) हो तो मसाईल पैदा नहीं होते।

जिस औ़रत ने भी यह किताब पढ़ ली तो हमें यक़ीन है कि इन्शा-अल्लाह उसे बहुत फ़ायदा होगा। अगर औ़रत पढ़ी हुई न हो तो उसको पढ़कर सुनाया जाये। अल्लाह तआ़ला आपको बेहतरीन बदला इनायत फ़रमाये। आमीन।

हम अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त से उम्मीद करते हैं कि इस

किताब को हमारे लिये बख़्शिश व निजात और अज्र व सवाब और अपनी रिज़ा (प्रसन्नता) का सबब बनाये और हम डरते हैं कि कहीं यह अमल शोहरत व फ़ख़्र की वजह से अल्लाह की नाराज़गी का सबब न बन जाये। क्योंकि:

लाज़िम है इनसान को रहे दूर रिया से
यह चीज़ जुदा करती है बन्दे को खुदा से

फ़क़त वस्सलाम

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

माँ की मुहब्बत व ममता

بسم اللّٰہ الرحمن الرحیم ٥

الحمد للّٰہ وکفٰی وسلام علٰی عبادہ الّذین اصطفٰی اما بعد!

فَاَعُوْذُبِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطَانِ الرَّجِیْمِ٥ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ٥ نَبِّیْٔ عِبَادِیْ اَنِّیْ اَنَا الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ٥ وَاَنَّ عَذَابِیْ ھُوَالْعَذَابُ الْعَظِیْمُ ٥ (سورۃ الحجر) وقال اللّٰہ تعالٰی فی مقام اخر: اِنَّ رَحْمَتِیْ وَسِعَتْ کُلَّ شَیْءٍ (سورۃ الاعراف) وقال اللّٰہ تعالٰی فی مقام اخر: اِنَّ رَحْمَۃَ اللّٰہِ قَرِیْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِیْنَ ٥ (سورۃ الاعراف) وقال اللّٰہ تعالٰی: کنتُ کنزًا مخفیًا واحببتُ ان اعرف وخلقتُ الخلق۔

سبحن ربك رب العزۃ عما یصفون ٥ وسلام علی المرسلین ٥ والحمد للّٰہ رب العالمین ٥ اللّٰھم صل علٰی سیّدنا محمد وعلٰی ال سیدنا محمد وبارك وسلم۔

मुहब्बत की कारफ़रमाई

हदीसे-कुदसी में अल्लाह तआला का इरशाद है:

کنتُ کنزًا مخفیًا واحببتُ ان اعرف وخلقتُ الخلق۔

मैं एक छुपा हुआ ख़ज़ाना था। मैंने पसन्द किया कि मैं

पहचाना जाऊँ। पस मैंने मख़्लूक़ को पैदा कर दिया।

मख़्लूक़ के पैदा होने का बुनियादी सबब यह रहा कि अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त को यह बात पसन्द आयी कि लोग मेरी मारिफ़त (पहचान) हासिल करें। मेरी बड़ाईयों से वाकिफ़ हों। चूँकि मख़्लूक़ की पैदाईश का सबब मुहब्बत बनी इसलिए हमारे बड़े मुहब्बत को पहला दर्जा देते हैं।

मुहब्बत की तक़सीम

यह मुहब्बत अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने अपनी सारी मख़्लूक़ में तक़सीम फ़रमाई। हर मख़्लूक़ ने अपनी-अपनी क्षमता और सलाहियत के मुताबिक़ उसमें से हिस्सा पाया। यह मुहब्बत जानदार चीज़ों को भी मिली और जो ग़ैर-जानदार हैं उनको भी मिली। पूरी दुनिया में मुहब्बत का राज है। आपने देखा होगा कि लोहा मक़नातीस की तरफ़ बेइख़्तियार खिंचता है। यह चीज़ों में मुहब्बत की दलील है। जो भी चीज़ ऊपर से फेंकें वह ज़मीन पर गिरती है। यह जमादात (बेजान चीज़ों) में मुहब्बत की दलील है। परिन्दों ने हिस्सा पाया, जानवरों ने हिस्सा पाया, इनसानों ने हिस्सा पाया, मिल-जुलकर रहना था। अगर दिलों में कोई ताल्लुक़ ही न होता, लोग एक दूसरे से अजनबी होते, एक की तकलीफ़ का दूसरा एहसास ही न करता, कोई किसी के साथ हमदर्दी न करता तो यह ज़िन्दगी इनसान के लिए गुज़ारनी मुश्किल हो जाती।

औलाद की मुहब्बत माँ-बाप से

इस मुहब्बत के नमूने आपको घर-घर में देखने को मिलते हैं। हर बेटी को बाप से मुहब्बत होती है। बाप बीमार है, बेटी सारी रात पास कुर्सी पर बैठी जाग रही है, कि मेरे अब्बू आँख खोलेंगे तो मैं उन्हें दवाई पेश करूँगी। खाने को कुछ माँगेंगे तो मैं खाना हाज़िर करूँगी। वह अपने आपको अपने बाप की बाँदी (ख़ादिमा, सेविका) समझती है। और इस रात भर की तकलीफ़ उठाने को वह अपना फ़र्ज़ और ज़िम्मेदारी समझती है। बल्कि बहुत सी बार तो उसके दिल से दुआयें निकलती हैं कि मैं बीमार हो जाती, अल्लाह तआला मेरे अब्बू को शिफ़ा अता कर देते। यह उस मुहब्बत की वजह से है जो अल्लाह ने बेटी के दिल में बाप के लिये डाल दी है।

माँ-बाप की मुहब्बत औलाद से

वालिद (बाप) की मुहब्बत जिस तरह बेटी के दिल में है उसी तरह बेटी की मुहब्बत अल्लाह तआला ने वालिद (बाप) के दिल में डाली। इसका मन्ज़र (दृश्य) आप उस वक़्त देखा करें जब किसी जवान बच्ची को घर से रुख़सत किया जा रहा होता है। उसका बाप अपनी कमाई का अधिकतर हिस्सा उसके दहेज पर ख़र्च कर देता है। और जब वह रुख़सत हो रही होती है तो बाप की आँखों से आँसू जारी होते हैं। देखने में तो उसका बोझ कम हो रहा है, उसके सर से एक फ़रीज़ा अदा हो रहा है, लेकिन वह समझता है कि यह मेरे जिगर का टुकड़ा है। मैंने

इतनी मुहब्बतों से पाला। मालूम नहीं आगे इसकी ज़िन्दगी कैसी होगी। हमने बेटी और बाप को ऐसे लिपट कर रोते देखा कि शायद लोग किसी की मौत पर भी इतना न रोते हों। तो जुदाई के वक़्त बाप और बेटी का रोना इस मुहब्बत की दलील है।

भाई और बहन की मुहब्बत

भाई और बहन के दिल में अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने मुहब्बत डाली। परदेस में बहन है। अपने बच्चों के साथ ख़ाविन्द (शौहर) के साथ ख़ुशियों भरी ज़िन्दगी गुज़ार रही है। जब उसको फ़ोन पर ख़बर मिलेगी कि भाई बीमार है और अस्पताल में दाख़िल है, उसे चैन नहीं आयेगा, उसे खाना अच्छा नहीं लगेगा। नफ़्लें पढ़कर दुआयें मागेंगी। रातों को जाग-जागकर दुआयें माँगेगी। ख़ैर की ख़बर सुनने के लिए हर वक़्त उसके कान मुन्तज़िर होंगे। ऐसी मुहब्बत होती है बहन के दिल में कि वह अपने बच्चों को भी भाई की बात समझाती है तो उसको चन्दा-मामूँ कहती है। उसकी नज़र में भाई जैसा भी है मगर चाँद से भी ज़्यादा ख़ूबसूरत है। ये मुहब्बतें इस ज़िन्दगी के गुज़ारने के लिए बुनियादी ज़रूरत थीं।

मियाँ-बीवी की मुहब्बत

मियाँ-बीवी की मुहब्बत की कई मिसालें आपके सामने हैं। तकलीफ़ एक को होती है महसूस दूसरा कर रहा होता है। बस नहीं चलता कि किस तरह दूसरे को ऐसी दवा दी जाये कि वह सेहतमन्द (स्वस्थ) हो जाये। शौहर समझता है कि बीवी का ग़म

मेरा ग़म है और बीवी की ख़ुशी मेरी ख़ुशी है। बीवी को देखा कि शौहर के कारोबार पर कोई बुरा वक़्त आ जाये तो अपने घर में शहज़ादी की तरह यह पत्नी थी, मगर शौहर के घर में ग़ुरबत को बरदाश्त करेगी। दूसरे पूछें भी सही तू कैसी है? तो अपने भाई और बाप को भी बताना पसन्द नहीं करेगी। समझेगी कि यह अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त की तरफ़ से है। जब शौहर मुझसे मुहब्बत करता है तो अब मेरे लिए हर तकलीफ़ को बरदाश्त करना आसान है।

औलाद और माँ-बाप की मुहब्बत

इसी तरह औलाद और माँ-बाप के दरमियान मुहब्बत होती है। हर बाप को अपनी औलाद के ऊपर शफ़क़त हासिल है। वह औलाद की हिफ़ाज़त करता है। घर में बच्चे अगर भूखे हों तो वह पसीना बहाता है। रातों को जाग-जागकर पहरा देता है। एक वक़्त में दो-दो जगह नौकरियाँ करता है। हालाँकि वह इतना कमा चुका कि वह अच्छी रोटी खा सकता है, लेकिन उसके सामने तो बच्चों की ज़रूरतें होती हैं, बाप अपने मुँह में कुछ नहीं डालेगा, अपने बच्चों के मुँह में ज़रूर डालेगा। यह मुहब्बत है जो अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने औलाद के लिये बाप के दिल में रख दी।

माँ की मुहब्बत

रह गयी बात माँ की मुहब्बत की तो माँ की ममता की तो मिसाल दी जाती है। माँ की मुहब्बत वह गहरा समन्दर है कि जिसकी गहराईयों को आज तक कोई नहीं नाप सका। माँ की

मुहब्बत वह हिमालये पहाड़ है कि जिसकी बुलन्दियों को आज तक कोई नहीं छू सका। माँ की मुहब्बत वह सदाबहार फूल है जिस पर कभी ख़िज़ाँ नहीं आती। माँ तो औलाद पर कुरबान हुई जाती है। और यह सिर्फ़ इनसानों में नहीं बल्कि परिन्दों में देख लीजिये, चिड़िया एक नन्ही सी जान है। गर्मी के मौसम में उड़कर जाती है और पसीना-पसीना होती है मगर चोंच में पानी लाकर अपने बच्चों को पिलाती है। उसकी अपनी चोंच में पानी था, प्यास लगी हुई थी, यह खुद पी सकती थी, मगर पीती नहीं कि उसके बच्चे प्यासे हैं। छोटी सी जान में देखो अपने बच्चों से कैसी मुहब्बत है।

चिड़िया की फ़रियाद

एक साहबी रज़ियल्लाहु अ़न्हु नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो रहे थे। एक दरख़्त पर उन्होंने एक घौंसला देखा जिसमें छोटे-छोटे बच्चे थे। चिड़िया कहीं गयी हुई थी। उनको वे प्यारे लगे, अच्छे लगे, उनको उन्होंने उठा लिया। थोड़ी देर बाद चिड़िया आ गयी। उसने उनके सर पर चहचहाना शुरू कर दिया। वह उनके सर पर उड़ती रही चहचहाती रही। वह सहाबी समझ न पाये। आख़िरकार थक कर चिड़िया उनके कन्धे पर बैठ गयी। उन्होंने उसको भी पकड़ लिया। नबी अ़लैहिस्सलाम की ख़िदमत मे आकर पेश किया। ऐ अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! ये बच्चे कितने प्यारे ख़ूबसूरत हैं। और वाक़िआ भी सारा सुनाया। नबी करीम

सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बात समझायी कि माँ के दिल में बच्चों की इतनी मुहब्बत थी कि पहले तो यह तुम्हारे सर पर उड़ती रही, फ़रियाद करती रही कि मेरे बच्चों को आज़ाद कर दो। मैं माँ हूँ मुझे बच्चों से जुदा न करो। मगर आप समझ न सके तो इस नन्ही सी जान ने यह फ़ैसला किया कि मैं बच्चों के बग़ैर तो रह नहीं सकती, मैं इस आज़ादी का क्या करूँगी कि मैं बच्चों से जुदा हूँ। इसलिए तुम्हारे कन्धे पर आकर बैठ गयी। अगरचे मैं क़ैद हो जाऊँगी मगर बच्चों के तो साथ रहूँगी। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि इनको वापस इनकी जगह छोड़ आओ।

मुर्ग़ी की ममता

आपने मुर्ग़ी को देखा होगा। छोटे-छोटे बच्चे होते हैं। अगर कभी बिल्ली क़रीब आने लगे तो यह मुर्ग़ी उन बच्चों को अपने पीछे कर लेती है और बिल्ली के सामने डटकर खड़ी हो जाती है। मुर्ग़ी को पता है कि मैं बिल्ली का मुक़ाबला नहीं कर सकती, मगर उसको यह भी पता है कि मैं अपनी आँखों के सामने अपने बच्चों को बिल्ली का लुक़्मा बनते देख नहीं सकती। उसकी मुहब्बत बरदाश्त नहीं करती, उसकी ममता बरदाश्त नहीं करती। वह समझती है कि बिल्ली पहले मेरी जान लेगी और मेरे बाद मेरे बच्चों को हाथ लगायेगी। माँ के दिल की मुहब्बत का अन्दाज़ा लगाईये। इनसान तो आख़िरकार इनसान है, अ़क़्ल, समझ और दानिश रखने वाला है।

यह एक बड़ी नेमत है

एक औरत के दिल में बच्चे की कितनी मुहब्बत होती है इसका कोई अन्दाज़ा नहीं लगा सकता। जवान बच्चियाँ इस बात को नहीं समझ सकतीं। जब तक वे ज़िन्दगी के उस हिस्से तक न पहुँचें। जब खुद माँ बनेंगी तब महसूस होगा कि माँ की मुहब्बत क्या चीज़ है। यह अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने माँ के दिल में रख दी। क्योंकि उसे परवरिश करनी थी, उसे बच्चों को पालना था। माँ के दिल में ऐसी मुहब्बत है कि बच्चों को हर मामले में अपने ऊपर तरजीह देती है।

एक बच्ची जिसकी शादी को चन्द साल हो गये, औलाद नहीं हो रही। अपने घर में ग़मगीन बैठी मुसल्ले पर रो रही है, दुआयें माँग रही है: ऐ अल्लाह! मुझे औलाद अता फ़रमा दे। अगर कोई इस बच्ची से पूछे कि तुम्हें अल्लाह ने हुस्न व जमाल और सुन्दरता अता फ़रमायी है, अच्छी तालीम अता की, मुहब्बत करने वाला शौहर अता किया, माल व दौलत के ढेर अता किये। दुनिया की इज़्ज़तें अता कीं। हर नेमत तुम्हारे पास मौजूद है। क्यों परेशान हो? वह जवाब देगी कि एक नेमत ऐसी है जो सबसे बड़ी है। मैं अल्लाह से वह माँग रही हूँ।

यह हज पर जायेगी तो तवाफ़े-काबा के बाद औलाद की दुआयें करेगी। 'मक़ामे इब्राहीम' पर सज्दे करेगी तो औलाद की दुआयें करेगी। काबा के 'ग़िलाफ़' को पकड़ेगी तो औलाद की दुआयें करेगी। तहज्जुद की नमाज़ पढ़ेगी तो औलाद की दुआयें

करेगी। कभी शबे-क़द्र में जागना नसीब हो तो औलाद की दुआयें करेगी। किसी नेक बुज़ुर्ग की महफ़िल में जाने का इत्तिफ़ाक़ हुआ तो औलाद की दुआयें करेगी। आख़िर यह कैसी नेमत है। जिसकी वजह से मग़मूम है, परेशान है।

हालाँकि बच्ची जानती है कि जब मैं माँ बनने लगूँगी तो नौ महीने का समय मेरी बीमारी में गुज़रेगा। न मेरा दिल कुछ खाने को चाहेगा। जो खाऊँगी कई बार वह भी बाहर निकल आयेगा। मुझे भूख बरदाश्त करनी पड़ेगी। बीमारों जैसी ज़िन्दगी गुज़ारनी पड़ेगी। मगर उसके दिल में ऐसी मुहब्बत होती है कि इस सब को बरदाश्त करने के लिए तैयार होती है।

उसको यह भी पता है कि जब बच्चे की पैदाईश का वक़्त आता है तो औरत को इस क़द्र तकलीफ़ होती है कि उसकी ज़िन्दगी और मौत का मसला होता है। बच्चा अपंग भी हो सकता है, माँ की मौत भी हो सकती है। लेकिन इस सबके बावजूद इस मशक़्क़त को उठाने के लिए तैयार है।

उसे यह भी पता है कि जब बच्चा हो जायेगा तो दो साल के लिए मुझे रातों को सोने का मौक़ा नहीं मिलेगा। मैं सारा दिन बच्चे के काम करूँगी और रात को भी बच्चे की ख़ातिर जागूँगी।

उसको अपनी बेआराम और नींद से ख़ाली रातों का पता होता है। उसको यह भी मालूम है कि मुझे बच्चे की ख़िदमत चन्द घन्टे नहीं बल्कि चौबीस घन्टे करनी पड़ेगी। मगर उसकी वह ख़ादिमा बनने के लिए तैयार है। आख़िर क्यों? इसलिये कि अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने उसके दिल में औलाद की मुहब्बत डाल

दी। डॉक्टरों को चेकअप करायेगी। किसी से पढ़ने का अ़मल लेगी। रात की तन्हाईयों में कुरआन पढ़-पढ़कर अल्लाह से माँगेगी। आख़िर यह क्या है? यह औलाद की मुहब्बत है।

पैदाईश के बाद माँ की तवज्जोह का केन्द्र

जब बच्चे की पैदाईश होती है तो माँ की ज़िन्दगी में तब्दीली आ जाती है। यह बेचारी अपने आपको भूल जाती है। हर वक़्त बच्चे की फ़िक्र लगी है। कभी उसे दूध पिला रही है, कभी सुला रही है, कभी पहना रही है, कभी बहला रही है, हर वक़्त उसकी सोचें बच्चे के बारे में, हर वक़्त उसकी फ़िक्र बच्चे के बारे में, बच्चे को ख़ुश देखकर यह ख़ुश हो जाती है और बच्चे को दुखी देखकर यह ग़मगीन हो जाती है।

बच्चे की पैदाईश के बाद मुहब्बतों के पैमाने (मानदंड) बदल गये। उसका कोई क़रीबी रिश्तेदार बच्चे को प्यार न करे तो यह उसे अपना नहीं ग़ैर समझेगी। और अगर कोई ग़ैर औरत उस बच्चे से मुहब्बत का इज़हार करेगी तो यह उसे अपना समझेगी। बच्चे की जुदाई इससे बरदाश्त हो नहीं सकती। कभी अपनी बहन के घर अपने बच्चे को भेज दिया तो थोड़ी देर के बाद फ़ोन करती है कि जल्दी पहुँचा दें। और जब बच्चा इसकी गोद में आता है तो यह समझती है कि सारी दुनिया की ख़ुशियाँ मेरी गोद में आ गईं। यह क्या चीज़ है? यह बच्चे की मुहब्बत है। जो अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने माँ के दिल में डाल दी है।

यह पहले बच्चे को खिलाती है फिर ख़ुद खाती है। पहले

बच्चे को पिलाती है फिर खुद पीती है। पहले बच्चे को सुलाती है बाद में खुद सोती है। सारा दिन इसने काम किया, थकी हुई थी आँखें नींद से भरी हुई थीं, जैसे ही लेटी बच्चे ने रोना शुरू कर दिया। यह बच्चे को उठाकर बैठ जायेगी। अपने आराम को कुरबान कर देगी। अगर बच्चे को उसकी गोद में नींद आ गयी तो वहीं बैठी रहेगी। हरकत भी नहीं करेगी। दिल में यह आयेगा कि मेरी हरकत से बच्चा जाग न जाये।

यह खुद भी थकी हुई थी, जाग रही है, लेकिन बच्चे का जागना इसको गवारा नहीं। यह अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने औलाद की मुहब्बत माँ के दिल में डाल दी है।

आख़िर यह क्या है?

चुनाँचा हमने देखा कि बच्चा जवान हो गया। काम करने बाहर निकला, रात को आने में देर हो गयी। घर के सब लोग अपने वक़्त पर खाना खा लेंगे। एक माँ होगी जो इन्तिज़ार में रहेगी। बेटी भी कहती है अम्मी खाना खा लो, मियाँ भी कहता है कि खाना खा लो। यह कहेगी नहीं! मैं बाद में खाऊँगी। उसके दिल में यह होता है मालूम नहीं मेरे बेटे को खाना मिला होगा या नहीं। जब मैं उसे देखूँगी फिर वह भी खायेगा मैं भी खाऊँगी।

सारे घर के लोग सो जाते हैं। यह माँ बिस्तर पर करवटें बदल रही होती है। कभी दरवाज़े को देखती है कभी फ़ोन की घन्टी सुनने लगती है। मेरे बच्चे का कहीं से पैग़ाम आये। दिल घबराता है उठकर मुसल्ले पर बैठ जाती है। दुपट्टा आसुँओं से

तर कर लेती है। अल्लाह मेरे बेटे की हिफ़ाज़त करना, ख़ैरियत से वापस आ जाये।

आख़िर यह क्या है? यह माँ के दिल में औलाद की मुहब्बत है। बल्कि सच्ची बात तो यह है कि दुनिया के सब लोग नेकों से मुहब्बत करते हैं लेकिन माँ एक ऐसी हस्ती है जो बुरी औलाद से भी मुहब्बत करती है। शौहर नाराज़ हो रहा है, तुम्हारे प्यार ने बच्चों को बिगाड़ा दिया। यह कहेगी यह तो मुक़द्दर था उनका, मैं क्या करूँ। आख़िर मेरा तो बच्चा है।

बाप गुस्से में कह जायेगा बच्चे को कि घर से चले जाओ। माँ कभी अपनी ज़बान से कह नहीं सकती। यह नेक औलाद से भी मुहब्बत करती है और बुरी औलाद से भी मुहब्बत करती है। अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने इसके दिल को ममता से भर दिया। यह वह नेमत है जो बाज़ार से नहीं मिल सकती। ममता वह नेमत है जिसकी क़ीमत कोई अदा नहीं कर सकता और उसको माँ के सिवा कोई दूसरा समझ भी नहीं सकता।

माँ की दुआ जन्नत की हवा

अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने शरीअत में माँ का बहुत बड़ा मक़ाम बना दिया। कहते हैं कि माँ की दुआ जन्नत की हवा होती है। जो मुहब्बत की नज़र अपनी माँ के चहरे पर डालता है, अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त एक हज या उमरे का सवाब अ़ता फ़रमा देता है। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने पूछाः जो बार-बार मुहब्बत व अक़ीदत से देखे। फ़रमाया जितनी बार देखेगा उतनी बार हज या उमरे का सवाब पायेगा।

इसलिए हमारे बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि माँ के क़दमों को बोसा देना (चूमना) काबे की देहलीज़ को बोसा देने के बराबर है। इसलिए कि माँ के क़दमों में जन्नत होती है। खुशनसीब है वह इनसान जिसने माँ की दुआयें ले लीं। जिसने माँ की ख़िदमत कर ली। माँ के दिल को राज़ी कर लिया।

एक वली (नेक आदमी) की वालिदा (माँ) का इन्तिक़ाल हो गया। अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने इल्हाम फ़रमाया (यानी अपनी तरफ़ से उनके दिल में यह बात डाली)। ऐ मेरे प्यारे! जिसकी दुआयें तेरी हिफ़ाज़त करती थीं अब वह दुनिया से रुख़्सत हो गयी। अब ज़रा संभल कर ज़िन्दगी गुज़ारना।

माँ की दुआयें औलाद के गिर्द पहरा देती हैं। औलाद को नहीं पता होता, माँ कब-कब कहाँ-कहाँ बैठी दुआयें दे रही होती है। यह बुढ़ापे की वजह से हड्डियों का ढाँचा बन जाये। फिर भी औलाद के लिए रहमत व शफ़क़त का साया होती है। हमेशा औलाद का अच्छा सोचती है। बल्कि औलाद की तरफ़ से तकलीफ़ भी पहुँचे तो जल्दी माफ़ कर देती है।

दुनिया में माँ से ज़्यादा जल्दी माफ़ करने वाला कोई नहीं। अपने बच्चे की तकलीफ़ देख नहीं सकती। इसलिए माँ का हक़ तीन बार बताया चौथी बार बाप का हक़ बताया। इसलिए कि माँ बच्चे की पैदाईश में मशक़्क़त उठाती है और बाप का हिस्सा शहवत (संभोग की इच्छा और कामवासना) के साथ होता है। माँ का नुत्फ़ा गर्भ के ज़्यादा क़रीब होता है कि सीने से आता है। बाप का नुत्फ़ा पुश्त से दूर से आता है इसलिए माँ के दिल में

औलाद की मुहब्बत अल्लाह ने ज़्यादा डाली।

हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के ज़माने की दो औरतें

हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के ज़माने में दो औरतें थीं। वे दोनों अपने छोटे-छोटे एक जैसे बच्चे उठाये हुए जंगल में से गुज़र रही थीं। एक भेड़िया आया और उसने उनमें से एक औरत के बच्चे को छीन लिया और भाग गया। थोड़ी देर के बाद उस औरत के दिल में यह ख़्याल आया कि यह दूसरी औरत का बच्चा मैं ले लूँ। उसने झगड़ा शुरू कर दिया। मामला हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम तक पहुँचा। दोनों अपना हक़ जतलाती हैं। वह कहती है इसके बच्चे को भेड़िया ले गया।

सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया छुरी लाओ मैं इस बच्चे के दो टुकड़े करता हूँ और दोनों में आधा-आधा तक़सीम कर देता हूँ।

उनमें से जब एक ने यह फ़ैसला सुना तो वह कहने लगी ठीक है। लेकिन जब दूसरी ने सुना तो रोना शुरू कर दिया। कहने लगी मेरे बच्चे के टुकड़े न करो। इस दूसरी औरत को दे दो यही पाल लेगी। कम से कम मेरा बच्चा ज़िन्दा तो रहेगा। आप समझ गये कि यह बच्चा इस औरत का है। आपने उसे अ़ता फ़रमाया।

यह भी हक़ीक़त है कि माँ कभी बच्चे से ख़ुद तो नाराज़ हो जाती है लेकिन दूसरों को नाराज़ नहीं होने देती। इसलिए अगर

बाप डाँट-डपट करे तो माँ से बरदाश्त नहीं होता। वह कहती है कि क्यों उसको इतना डाँटते हैं? यह उस ममता की वजह से है। खुद झिड़की दे लेगी मगर किसी की झिड़की बरदाश्त नहीं होती। यह असल में मुहब्बत है। और इसकी दलील कुरआन मजीद से मिलती है।

सारी मख़्लूक़ के अन्दर जितनी मुहब्बतें हैं, इनसानों को, हैवानों को, चरिन्दों को, परिन्दों को, मछलियों को, कीड़े-मकोड़ों को, सबकी मुहब्बतों को जमा किया जाये तो ये सब मिलकर भी अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त की रहमत के सत्तरहवें हिस्से के बराबर नहीं हो सकतीं।

सुनिये और दिल के कानों से सुनिये

अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त को अपनी मख़्लूक़ से इतनी मुहब्बत है कि अल्लाह अपने बन्दों पर हद से ज़्यादा मेहरबान और नर्मी करने वाले हैं। इसी लिए कुरआन मजीद से इसकी गवाही मिलती है। सुनिये और ज़रा दिल के कानों से सुनिये। कुरआन मजीद गवाही दे रहा है। ग़ज़वा-ए-उहुद (उहुद की जंग) में सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से एक भूल हुई।

चन्द सहाबा को नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पहाड़ी पर खड़ा किया था। जब फ़तह हुई काफ़िर पीछे हटने लगे तो ये समझे कि ड्यूटी मुकम्मल हो गयी। ग़लत-फ़हमी की बिना पर नीचे उतर आये। ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अ़न्हु उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हुए थे। उन्होंने मौक़ा पाकर पीछे से हमला किया। मुसलमान दोनों तरफ़ से घिर गये और काफ़िरों के

दरमियान में आ गये। कई सहाबा शहीद हुए। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी पत्थर लगा, दाँत मुबारक शहीद हुए। आपके जिस्म से ख़ून निकल आया। आप इस बात पर बहुत ग़मगीन थे। बड़े-बड़े रुतबे वाले सहाबा शहीद हुए थे। और बहुत बड़ी तायदाद तो ज़ख़्मी थी।

सैयदुश्शु-हदा हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु भी शहीद हुए थे। जो नबी अलैहिस्सलाम के ग़मगुसार थे। चुनाँचे जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना में आये तो आप ख़ामोश थे। ग़मगीन थे। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से कलाम नहीं कर रहे थे।

अब ज़रा देखिये कुरआन मजीद को अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त को नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह नाराज़गी पसन्द न आयी। कि यह अपने सहाबा से क्यों नाराज़ हैं। जैसे माँ को बच्चों से किसी की नाराज़गी पसन्द नहीं आती। अल्लाह तआला ने सिफ़ारिश फ़रमा दी। फ़रमाया:

فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِي الْأَمْرِ (سورة آل عمران: ١٥٩)

ऐ मेरे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! उन्हें माफ़ फ़रमा दीजिए। उनके लिए आप इस्तिग़फ़ार कीजिए मैं ख़ुद भी उन्हें माफ़ कर दूँगा। और उन्हें मश्विरे में शामिल कर लीजिए।

तो देखो अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त मोमिनों की सिफ़ारिश फ़रमाते हैं। अल्लाह तआला को यह बरदाश्त न हुआ कि मेरे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से क्यों नाराज़ हैं। एक मौके पर सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु अपने

एक रिश्तेदार से नाराज़ हुए। उन्होंने हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा के बोहतान के बारे में सच समझ लिया था। ग़लत-फ़हमी दिल में आ गयी थी। सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने दिल में सोचाः मैं हर महीने उनको कुछ पैसे देता हूँ इमदाद के तौर पर, न मैं वह ताल्लुक़ रखूँगा न मैं इमदाद भेजूँगा। रब्बे करीम ने बोहतान लगाने वाले मुनाफ़िक़ों को डाँट पिलाई। जो सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम उनकी बातों में आ गये थे उनको भी फटकार लगाई। खुद डाँट-डपट कर ली मगर सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु को नाराज़ न होने दिया। फ़रमायाः

وَلْيَعْفُوا وَلْيَصْفَحُوا أَلَا تُحِبُّونَ أَن يَغْفِرَ اللَّهُ لَكُمْ (سورة النور: ٢٢)

उनको चाहिए कि उनको माफ़ करें उनके साथ मुहब्बत का ताल्लुक़ रखें। क्या ये नहीं चाहते कि अल्लाह तआला उनको माफ़ कर दें।

सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब ये आयतें सुनीं तो आपने दिल से भी माफ़ कर दिया और आइन्दा उनको दोगुना महीना देने का इरादा फ़रमा लिया।

तो सोचने की बात है कि जिस तरह माँ खुद डाँट-डपट कर लेती है किसी को औलाद को डाँटने का मौक़ा नहीं देती। यूँ लगाता है कि अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त को भी ईमान वालों के साथ ऐसी ही मुहब्बत है। खुद नाराज़ हो गये, डाँट लिया, लेकिन अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नाराज़गी पसन्द न आयी। उनको फ़रमा दिया कि आप उनको माफ़ फ़रमा दीजिए। हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की नाराज़गी पसन्द न

आयी। उनको भी समझा दिया कि माफ़ कर दो, क्या तुम नहीं चाहते कि तुम्हें अल्लाह माफ़ कर दे।

सोचने की बात

यहाँ एक नुक्ता समझने का यह है कि जो परवर्दिगार दूसरों की नाराज़गी को बरदाश्त नहीं करता, वह अगर खुद किसी बात पर नाराज़ हो तो उसको कैसे बरदाश्त करेगा कि वह नाराज़ रहे। इसलिए अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त की यह चाहत है कि मेरे बन्दे गुनाहों से सच्ची तौबा करें। मेरे दर पर आकर माफ़ी माँग लें और मैं उनको माफ़ कर दूँ।

बच्चा अपनी माँ से जब भी माफ़ी माँगता है माँ जल्दी माफ़ कर देती है। अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त तो उससे भी ज़्यादा मोमिन पर मेहरबान हैं। इसलिए अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त से माफ़ी माँगना बहुत आसान है। और ख़ास तौर पर रमज़ान मुबारक के महीने में जो रहमतों का महीना है, परवर्दिगार की रहमतों और मग़फ़िरतों के दरवाज़े खुल जाते हैं। अब तो मग़फ़िरत हासिल करने के लिए बहाने की ज़रूरत है। यह हमारी ख़ुशनसीबी (सौभाग्य) है कि हम रमज़ान मुबारक के आख़िरी दशक में ज़िन्दा हैं। अल्लाह ने हमें सुनहरा मौक़ा दे दिया। अपने गुज़रे हुए गुनाहों पर नादिम और शर्मिन्दा हो जायें। माफ़ी माँग लीजिए। परवर्दिगारे-आलम माफ़ फ़रमा देंगे। हमारे सर से गुनाहों का बोझ हट जायेगा। माँ चाहे जितनी भी नाराज़ हो बच्चे की तकलीफ़ नहीं देख सकती, माफ़ कर देती है।

अल्लाह की रहमत की विशालता

चुनाँचे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक बार एक क़ाफ़िले को देखा। एक माँ परेशान थी उसको अपने सर पर दुपट्टे का होश भी नहीं था। उसका बेटा गुम हो गया था। वह भागी फिर रही थी। लोगों से पूछती थीः किसी ने मेरे बेटे को देखा हो तो मुझे बताओ। यह मन्ज़र भी अ़जीब होता है कि माँ का जिगर का टुकड़ा उससे जुदा हो, उस पर क्या गुज़रती है। उसका दिल मछली की तरह तड़प रहा होता है। शब्दों में बयान नहीं कर सकती कि उस पर क्या मुसीबत गुज़रती है। उसकी आँखें तलाश कर रही होती हैं कि मेरा बेटा मुझे नज़र आ जाये।

नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से पूछाः यह माँ अपने बेटे की वजह से परेशान है, अगर इसे इसका बेटा मिल जाये तो क्या यह उसको आग में डाल देगी। सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने कहा ऐ अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! कभी नहीं डालेगी। इतनी मुहब्बत है इसको बच्चे से, यह तो गवारा नहीं करेगी। नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया जिस तरह माँ अपने बच्चे को आग में डालना गवारा नहीं करती इसी तरह अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त भी मोमिन बन्दे को आग में डालना गवारा नहीं करते। तो अल्लाह तआ़ला से माफ़ी माँगनी तो बहुत आसान है। इसलिए कि उनकी मुहब्बत तो सारी दुनिया की माँओं से सत्तर गुना ज़्यादा है।

हदीस पाक में आता है कि एक नौजवान सहाबी थे, उन्होंने

अपनी माँ को नाराज़ कर रखा था। कोई तकलीफ़ पहुँचाई थी, नाराज़ होकर धक्का दिया और माँ को चोट आ गयी। तो वह दिल से नाराज़ थीं। अब इन सहाबी की मौत का वक़्त आ गया। आख़िरी वक़्त की कैफ़ियात तारी हैं मगर मौत नहीं आती, नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया गया। इरशाद फ़रमायाः मैं खुद चलता हूँ। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तशरीफ़ लाये, सूरतेहाल मालूम की, आपने उनकी वालिदा (माँ) से सिफ़ारिश फ़रमायी कि अपने बेटे को माफ़ कर दे। वह कहने लगी मैं हरगिज़ माफ़ नहीं करूँगी। उसने मुझे इतना दुख दिया इतना सताया कि मैं उसे माफ़ कर ही नहीं सकती।

जब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने देखा कि यह अपनी बात पर अड़ी हुई है तो नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया लाओ आग के लिए लकड़ियाँ इकट्ठी करो। जब उसने यह सुना तो वह पूछने लगी कि लकड़ियाँ क्यों मंगवा रहे हैं? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया आग जलायेंगे और तुम्हारे बेटे को उस आग में डालेंगे। तू उससे राज़ी जो नहीं हो रही। उसने जैसे ही यह सुना दिल मोम हो गया। कहने लगी ऐ अल्लाह के नबी! मेरे बेटे को आग में न डालिये मैंने अपने बेटे की ग़लतियों को माफ़ कर दिया।

तो जब माँ नहीं चाहती कि बेटा आग में जाये तो अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त कैसे चाहेंगे कि उसके मोमिन बन्दे जहन्नम में जायें। माँ ने जितनी भी तकलीफ़ें उठायी हों आख़िरकार माँ, माँ होती है। मुहब्बत के हाथों मजबूर होती है।

एक सबक़ लेने वाला सच्चा वाक़िआ

आपकी ख़िदमत में एक सच्चा वाक़िआ पेश कर दूँ। एक नौजवान की शादी हुई उसको बीवी से बहुत प्यार था। और बीवी की तबीयत कामचोर थी। वह उस नौजवान के माँ-बाप की ख़िदमत को बोझ समझती थी। कुछ अ़रसे के बाद उसने देखा कि शौहर तो मुझसे बहुत प्यार करता है, तो वह अपने शौहर से नाराज़-नाराज़ रहने लगी। जवानी थी शौहर से बरदाश्त न हुआ, उसने पूछा क्या बात है? कहने लगी मैं तुम्हारे साथ ठीक रहूँगी जब तुम यहाँ से मुझे मेरे घर वापस ले जाओ और मेरे साथ वहीं पर तुम भी रहो। मैं आपके साथ तो ख़ुश रह सकती हूँ इन बूढ़ों की ख़िदमत करना पड़ती है। यह मुझसे नहीं हो सकता।

अब वह नौजवान ऐसा था कि उसने बीवी की बात को मान लिया। बूढ़े माँ-बाप को छोड़कर आख़िरकार दूसरे शहर में जाकर घर ले लिया। माँ-बाप ने बहुत समझाया कि बेटा तेरे सिवा हमारा कोई नहीं, मगर बच्चे के कान में जूँ भी न रेंगी। वह अपनी बीवी के साथ दूसरे शहर में ऐश व आराम के साथ ज़िन्दगी गुज़ारता रहा। आख़िरकार उसको सऊदी अ़रब जाने का मौक़ा मिल गया। नौकरी अच्छी थी। यह वहाँ चला गया। पैसे ज़्यादा आ गये, बीवी को शानदार मकान बनाकर दे दिया। सारा ख़र्चा बीवी के लिए भेजा, अपने माँ-बाप से उसने कोई राबता (संपर्क और ताल्लुक़) न रखा। बीवी कहती थी कि अगर उनसे राबता करोगे तो मैं राबता तोड़ लूँगी। मुहब्बत के हाथों मजबूर

होकर उसने यह करतूत की कि अपने बूढ़े माँ-बाप को उसने नज़र-अन्दाज़ कर दिया। इसी तरह कई साल गुज़र गये।

एक बार यह तवाफ़ कर रहा था, एक बुज़ुर्ग भी तवाफ़ कर रहे थे। तवाफ़ के बाद उन बुज़ुर्ग के पास आया, कहने लगा! मैं जब से यहाँ आया हूँ बारह साल में मैंने बारह हज किए सैकड़ों उमरे किए लेकिन मेरे दिल पर कोई ताला लगा हुआ है। मेरे दिल पर अंधेरी छाई हुई है, न इबादत को जी चाहता है न किसी और काम को, मालूम नहीं मैं क्यों ऐसा हूँ। उन बुज़ुर्ग ने पूछा कि तूने किसी के दिल को दुख तो नहीं दिया? जब उसको माँ-बाप की याद आयी। कहने लगा हाँ! मैं बूढ़े माँ-बाप को छोड़कर यहाँ आया। और मैं समझा कि मेरे हजों और उमरों से वह सारा गुनाह धुल जायेगा।

उन्होंने फ़रमाया कि और हज करने की ज़रूरत नहीं, जाओ और अपने माँ-बाप से पहले माफ़ी माँगो। चुनाँचे टिकट बनवाकर यह अपने मुल्क वापस आया। अपने माँ-बाप के गाँव में गया, बारह साल गुज़र चुके थे। कुछ पता नहीं था कि उसके माँ-बाप के साथ क्या गुज़री।

उस बस्ती के किनारे पर एक आदमी मिला, इसने डरते-डरते माँ-बाप के बारे में पूछा। उसने असको न पहचाना और यह बताया कि उनका एक जवान बेटा था जो उनको छोड़कर बीवी के लिए चला गया। वह मियाँ-बीवी बूढ़े थे। बहुत तंगी की ज़िन्दगी उन्होंने गुज़ारी, आख़िरकार एक वक़्त आया कि शौहर भी फ़ौत हो गया, अब बेचारी माँ घर में अकेली रह गयीं। पड़ोसियों

ने तरस खाया तो उन्होंने रोटी भेज दी। न भेजी तो उसने अल्लाह का शुक्र अदा कर लिया। सब्र कर लिया। फिर उस औरत को फ़ालिज हो गया। अब सुना है कि चन्द दिनों से उसकी आँखों की बीनाई (रोशनी) चली गयी है। बुढ़ापे की वजह से अन्धी हो चुकी है। फ़ालिज का शिकार है। लेकिन पता नहीं कोई बात है कि अक्सर दुआयें माँगती रहती है और किसी को याद करती रहती है।

यह अपने घर में गया, दरवाज़ा खोलकर देखा, माँ बिस्तर पर लेटी हुई थी। हड्डियों का ढाँचा बन चुकी थी। सोच रहा था कि मैंने माँ को इतना सताया यह मुझे कहेगी दफ़ा हो जाओ, मैं तुम्हें कभी माफ़ नहीं कर सकती, लेकिन जब उसके पाँवों की अहट माँ ने सुनी तो पूछने लगी कौन है? उसने बताया मैं आपका बेटा हूँ। माँ की आँखों में आँसू आ गये। बेटे तूने बहुत इन्तिज़ार करवाया, मैं इस घर में अकेली मुसीबतों की मारी लेटी हूँ। दिल की आख़िरी तमन्ना थी कि तुम आ जाते, मैं तुम्हारी शक्ल नहीं देख सकती, तुम्हारी आवाज़ तो सुन सकती हूँ। बेटे तुम्हारा चेहरा कहाँ है मुझे हाथ लगाने दो। बेटे क़रीब आओ मेरे सीने से लग जाओ। यह माँ की मुहब्बत होती है कि इतने दुख बरदाश्त करने के बावजूद भी वह सिर्फ़ बेटे के घर आ जाने से ख़ुश हो जाती है।

तो जिस तरह माँ अपने बेटे के घर आ जाने पर ख़ुश हो जाती है, सब कुछ माफ़ कर देती है। इसी तरह परवर्दिगारे आ़लम भी अपने बन्दे के अपने दर पर आ जाने से ख़ुश हो जाते हैं और बन्दों के गुनाहों को माफ़ फ़रमा देते हैं।

सुनहरी मिसाल

आप एक मिसाल ज़रा सोचिये कि अगर माँ-बाप का कोई बेटा हो जिसको उनका कोई बड़ा दुश्मन बहका ले, गुमराह कर दे और माँ-बाप से जुदा कर दे। और माँ-बाप यह समझते हों कि हमारे बेटे का भी क़ुसूर है, लेकिन बहकाने वाले का ज़्यादा क़ुसूर है। वे दुआयें करते हैं कि अल्लाह उसको वापस लाये। अगर मान लो किसी दिन माँ घर में अकेली है और वह बेटा अपने घर वापस आ गया, अगर दरवाज़े पर खड़ा होकर कहता है कि अम्मी दरवाज़ा खोलिये। आप क्या समझती हैं कि वह दरवाज़ा खोलेगी या बन्द रखेगी? वह तो दुआयें माँगती थी कि मेरा बेटा दुश्मन के हाथों से छूटकर मेरे पास आ जाये।

बिल्कुल इसी तरह शैतान अल्लाह तआला का दुश्मन है, उसने अल्लाह के बन्दों को बहकाया और गुमराह किया, अल्लाह से ग़ाफ़िल बना दिया। परवर्दिगारे आलम चाहते हैं कि ये दुश्मन से छूटकर मेरे पास आयें, मैं उनके लिए दरवाज़े खोल दूँगा। माँ तो फिर भी दरवाज़ा बन्द रखती है, बेटे के आने पर खोलना पड़ता है, परवर्दिगार का मामला तो यह है कि तौबा का दरवाज़ा बन्द ही नहीं करते।

सच्ची तौबा कर लीजिए

हम रमज़ान मुबारक की इन मुबारक घड़ियों में अपने गुनाहों से सच्ची माफ़ी माँगें, अपने रब को मनायें, अपनी ज़िन्दगी के पिछले सब गुनाहों से माफ़ी माँगकर अल्लाह के महबूब बन्दों में

शामिल हो जायें। अल्लाह करे कि यह रमज़ान मुबारक का वक़्त हमारे लिए बख़्शिश का वक़्त बन जाये। आमीन।

आजकी इस महफ़िल को ग़नीमत समझते हुए सच्चे दिल से तौबा कर लीजिए। आईन्दा विभिन्न महफ़िलों में औरतों की तरबियत (पालन-पोषण, सभ्यता और शिष्टाचार की शिक्षा) के बारे में कुछ बातें की जायेंगी। कुछ महफ़िलों में बच्चों की तरबियत के बारे में कुछ बातें बताई जायेंगी। लेकिन शुरू में यह बात ज़ेहन में आई कि काम तौबा से शुरू करना चाहिए। इसलिए आप आज उठने से पहले अपने परवर्दिगार से सच्ची माफ़ी माँगें। और अगर आप ने अपने माँ-बाप के दिल को सताया है तो उनसे सच्ची माफी माँगें, पाँव पकड़कर माफ़ी माँगें। उनके पाँव को बोसा देना अपना सौभाग्य समझें। और आईन्दा की महफ़िलों पाबन्दी से तशरीफ़ लायें। अपनी दूसरी अ़ज़ीज़ रिश्तेदार औरतों को भी यहाँ आने को कहें। अगरचे ट्रांस्मीटर के ज़रिये आवाज़ घर भी पहुँच जायेगी मगर चलकर आने की अपनी क़ीमत होती है। आप अल्लाह के घर में चलकर आयेंगी, एक तो बात तवज्जोह से सुनेंगी दिल पर तवज्जोह असर करेगी, और दूसरे अल्लाह तआ़ला चलकर आने की रियायत फ़रमायेंगे।

दुआ़ है कि अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त हमारी इन विभिन्न महफ़िलों में हमारे गुनाहों को माफ़ फ़रमा दे। हमारी इस्लाह (सुधार) फ़रमा दे। और हमें अपने मक़्बूल बन्दों में शामिल फ़रमा ले। आमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ ۝